आईसीडब्ल्यूए समाचार पत्रक

अंक 170 अप्रैल-जून 2019

"इंडियन कल्चरल डिप्लोमेसी: सैलिब्रेटिंग प्लूरलिज़्म इन ए ग्लोबलाइज्ड वर्ल्ड" पर परिचर्चा और पुस्तक का विमोचन, सप्रू हाउस, ०२ अप्रैल, २०१९

राजदूत परमजीत सहाय द्वारा लिखित पुस्तक "इंडियन कल्चरल डिप्लोमेसी: सैलिब्रेटिंग प्लूरलिज़्म इन ए ग्लोबलाइज्ड वर्ल्ड" (आईसीडब्ल्यूए प्रकाशन) का सप्रू हाउस में 02 अप्रैल, 2019 को विमोचन किया गया और इस पर परिचर्चा आयोजित की गई. कार्यक्रम का शुभारंभ आईसीडब्ल्यूए के महानिदेशक डॉ. टी.सी.ए. राघवन के स्वागत अभिभाषण से हुआ। इसके बाद अध्यक्ष, राजदूत ललित मानसिंह ने अपने विचार प्रस्तुत किए। पुस्तक के लेखक राजदूत परमजीत सहाय ने इसके बारे में संक्षिप्त परिचय दिया, तत्पश्चात पैनल परिचर्चा हुई। इस सत्र के पैनल सदस्यों में श्री सुरेश के. गोयल, भूतपूर्व महानिदेशक, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, श्री तरूण विजय, भूतपूर्व सांसद, श्री अखिलेश मिश्र, महानिदेशक, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद शामिल थे।

आईसीडब्ल्यूए की प्रमुख बातें

- राजदूत परमजीत सहाय द्वारा 'इंडियन कल्चरल डिप्लोमेसी: सैलिब्रेटिंग प्लूरलिज़्म इन ए ग्लोबलाइज्ड वर्ल्ड' पुस्तक का विमोचन और परिचर्चा
- विश्व मामलों की भारतीय परिषद - वियतनाम सामाजिक विज्ञान अकादमी (वीएएसएस) का द्वितीय संवाद, सप्रू हाउस
- प्रथम आईबीएसए गांधी-मंडेला स्मारक स्वतंत्रता व्याख्यान
- आईसीडब्ल्यूए - एनसीडब्ल्यूए (विश्व मामलों की नेपाल परिषद) का द्वितीय संवाद, सप्रू हाउस
- चतुर्थ आईसीडब्ल्यूए - एशिया न्यूजीलैंड प्रतिष्ठान - एनजेडआईआरआई ट्रैक II संवाद, वेलिंग्टन
- प्रथम आईसीडब्ल्यूए-अमीरात रणनीतिक अध्ययन और अनुसंधान केन्द्र (ईसीएसएसआर) संवाद, सप्रू हाउस
- प्रो. एस.डी. मुनी और डॉ. राहुल मिश्रा द्वारा 'इंडियाज ईस्टवर्ड एंगेजमेंट: फ्रॉम एंटिक्विटी टू एक्ट ईस्ट पॉलिसीष विषयक पुस्तक का विमोचन और परिचर्चा
- "भारत-म्यांमार संबंधों में प्रगाढ़ता: बेहतर भविष्य की ओर" पर राष्ट्रीय संगोष्ठी, सप्रू हाउस

विश्व मामलों की भारतीय परिषद – वियतनाम सामाजिक विज्ञान अकादमी (वीएएसएस) का दूसरा संवाद, सप्रू हाउस

विश्व मामलों की भारतीय परिषद और वियतनाम सामाजिक विज्ञान अकादमी के बीच द्वितीय संवाद सप्रू हाउस, नई दिल्ली में 3-4 अप्रैल, 2019 के दौरान संचालित किया गया। वीएएसएस के 5 सदस्यीय शिष्टमंडल का नेतृत्व वियतनाम सामाजिक विज्ञान अकादमी (वीएएसएस) के उपाध्यक्ष डॉ. डांग ज्वान थान्ह द्वारा किया गया। डॉ. टी.सी.ए. राघवन, महानिदेशक, आईसीडब्ल्यूए ने 7 सदस्यों वाले भारतीय शिष्टमंडल का नेतृत्व किया। भारत में वियतनाम के राजदूत महामहिम थाम सान चाउ भी संवाद के प्रथम दिन शामिल हुए।

वीएएसएस के शिष्टमंडल में वीएएसएस के उपाध्यक्ष डॉ. डांग ज्वान थान्ह, एसोसिएट प्रो. डॉ. कू चि लोई, वियतनाम अमेरिकी अध्ययन संस्थान वीएएसएस के निदेशक, वियतनाम चीनी अध्ययन संस्थान, वीएएसएस के निदेशक डॉ. नूयेन ज्वान कांग, वियतनाम भारतीय एवं दक्षिण-पश्चिम एशिया अध्ययन संस्थान, वीएएसएस के निदेशक प्रो. डॉ. नूयेन ज्वान ट्रंग, और वियतनाम भारतीय एवं दक्षिण-पश्चिम एशिया अध्ययन संस्थान, वीएएसएस के डॉ. ली ति हांग गा शामिल थे।

आईसीडब्ल्यूए के शिष्टमंडल में आईसीडब्ल्यूए के महानिदेशक डॉ. टी.सी.ए. राघवन, प्रो. जयचन्द्र रेड्डी, निदेशक-दक्षिण पूर्व एशिया एवं प्रशांत यूजीसी अध्ययन केन्द्र, श्री वेंकेटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरूपति, प्रो. राम उपेन्द्र दास, अध्यक्ष, क्षेत्रीय व्यापार केंद्र, डॉ. सोनू त्रिवेदी, सहायक प्रोफेसर, जाकिर हुसैन कॉलेज दिल्ली, प्रो. श्रीमती तिलोत्तमा मुखर्जी, एसोसिएट प्रोफेसर, अंतर्राष्ट्रीय संबंध विभाग, जादवपुर विश्वविद्यालय, डॉ. सृष्टि पुखरेम, शोध अध्येता, इंडिया फाउंडेशन, आईसीडब्ल्यूए के शोध अध्येता डॉ. ध्रुबाज्योति भट्टाचार्जी और डॉ. तेमजेमेरें औ शामिल थे।

द्वितीय दौर के संवाद में क्षेत्रीय और वैश्विक मुद्दों, भारत और वियतनाम के बीच द्विपक्षीय संबंधों और ऐसे अन्य संगत मुद्दों पर परिचर्चा की गई, जिससे दोनों देशों के बीच व्यापक साझेदारी का मार्ग प्रशस्त होगा। सामरिक और रक्षा संबंधी सहयोग के मामलों में परिचर्चा के साथ दोनों देशों के बीच आर्थिक और व्यापारिक सहयोग को बढ़ाने के पर्याप्त कार्य क्षेत्रों को भी शामिल किया गया। उच्च प्रौद्योगिकी, सॉफ्टवेयर उद्योग, इलैक्ट्रॉनिक उद्योग, कृषि और संबंधित सामग्री के क्षेत्र में निवेश कार्य को बढ़ाने का भी आह्वान किया गया।

राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार बोर्ड (एनएसएबी) के अध्यक्ष राजदूत पी.एस. राघवन द्वारा 'राष्ट्रीय सुरक्षा संस्थान: उभरती हुई चुनौतियों का समाधन' विषय पर सप्रू हाउस में 09 अप्रैल 2019 को दिया गया व्याख्यान

परिषद ने राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार बोर्ड (एनएसएबी) के अध्यक्ष राजदूत पी.एस. राघवन द्वारा 'राष्ट्रीय सुरक्षा संस्थान: उभरती हुई चुनौतियों का समाधान' विषय पर 09 अप्रैल 2019 को एक व्याख्यान के साथ राष्ट्रीय सुरक्षा श्रृंखला पर द्वितीय सत्र का आयोजन किया। पैनल सदस्यों में राजदूत लीला के. पोनप्पा, पूर्व डिप्टी एनएसए और डॉ. हप्पीमन जैकब, सहायक प्रोफेसर, जेएनयू शामिल थे। डॉ. टी.सी.ए. राघवन, महानिदेशक, आईसीडब्ल्यूए ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा पर चिंतन मनन एक महत्वपूर्ण विषय है, जिसका गम्भीरता के साथ मूल्यांकन करने की आवश्यकता है। राजदूत पी.एस. राघवन ने कहा कि राष्ट्रीय सुरक्षा का ताना-बाना कारगिल की घटना के बाद राष्ट्रीय सुरक्षा के परिप्रेक्ष्य में उत्पन्न अंतरालों को भरने के लिए सारगर्भित और ठोस युक्तियों का निर्धारण करता है। उन्होंने कहा कि मौजूदा भौगोलिक-राजनैतिक वातावरण शीत युद्ध से भी खराब रूप धारण किए हुए हैं। इस परिप्रेक्ष्य में हमें सर्वोच्च राष्ट्रीय सुरक्षा अवसंरचनाओं के बीच आत्मविश्वास के साथ निकट समन्वयन करने की आवश्यकता है। उन्होंने यह भी कहा कि राष्ट्रीय सुरक्षा का कार्य प्रगति की ओर अग्रसर है। उन्होंने कहा कि विश्वसनीय राष्ट्रीय सुरक्षा कार्यनीति के अंतर्गत सरकार द्वारा सर्वोच्च स्तर से निदेश दिए जाने चाहिए।

राजदूत लीला के. पोनप्पा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हमें एक राष्ट्रीय सुरक्षा सिद्धांत बनाने की आवश्यकता है और यह वह क्षेत्र है जिसमें सार्वजनिक अभिगम्यता की आवश्यकता है। उन्होंने कार्यकारी संस्वीकृति के लिए राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के कार्य में सुधार लाने पर भी जोर दिया। उन्होंने कहा कि इस दिशा में बेहतर समझ-बूझ बनाने के साथ-साथ प्रत्येक भारतीय को यह महसूस कराना है कि वे राष्ट्रीय सुरक्षा का एक हिस्सा हैं।

डॉ. हप्पीमन जैकब ने तर्क देते हुए कहा कि विशेष रूप से सुशासन कार्य तंत्र और सामान्य रूप से सम्पूर्ण देश में राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ रही है। इस जागरूकता अभियान को संबंधित अवसंरचनाओं और प्रणालियों में सुधार लाकर और आगे बढ़ाना है। तथापि, सीमा प्रबंधन के बाबत अब भी कोई एसओपी नहीं है। राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद सचिवालय का अब भी सरकार के आवंटन संबंधी नियमों में कोई जिक्र नहीं किया जाता है। राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार संस्थान को विधिक और संस्थागत स्थान दिए जाने की आवश्यकता है। रक्षा आयोजना समिति के बारे में भी यह विचार अभियक्त किए जाते हैं कि एक समिति इतने अधिक कार्यों को कैसे संचालित कर सकती है। उन्होंने यह कहते हुए अपनी बात समाप्त की कि हमारे पास एकीकृत सैनिक सिद्धांत नहीं हैं। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय सुरक्षा को संचालित करने के लिए तदर्थ कार्य पद्धति को समाप्त किया जाना चाहिए।

चतुर्थ आईसीडब्ल्यूए - एशिया न्यूजीलैंड प्रतिष्ठान - एनजेडआईआरआई ट्रैक-II संवाद, वेलिंग्टन, न्यूजीलैंड, 10-11 अप्रैल 2019

यह संवाद भागीदारों के बीच खुली और मुक्त परिचर्चा करने के लिए आयोजित किया गया। इसमें जोर देकर कहा गया कि दोनों देशों को अंतर्राष्ट्रीय नियमावली पर आधारित व्यवस्था को मजबूत करने और बहुपक्षीय क्षेत्र, विशेष रूप से संयुक्त राष्ट्र संघ की व्यवस्था को मजबूत करने के उद्देश्य के साथ परस्पर सहयोग किए जाने की आवश्यकता है, जिससे वैश्विक स्थिरता और विकास से संबंधित नियम ठोस और सारगर्भित हो सकें। इस अनुक्रम में सुझाव दिया गया कि भारत और न्यूजीलैंड को कृषि, रक्षा संबंधों और प्रशांत क्षेत्र में सहयोग की संभावनाओं का पता लगाना चाहिए। बदलते हुए वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारत की भूमिका पर न्यूजीलैंड के विचारों में पर्याप्त परिवर्तन आया है। आईसीडब्ल्यूए के शिष्टमंडल में श्री सोमेन बागची, उप महानिदेशक एवं शिष्टमंडल अध्यक्ष, आईसीडब्ल्यूए, प्रो. जी. जयचन्द्र रेड्डी, दक्षिण-पूर्व एशिया और प्रशांत अध्ययन केन्द्र, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय तिरूपति, आईसीडब्ल्यूए की शोध अध्येता डॉ. स्तुति बनर्जी और डॉ. प्रज्ञा पांडेय शामिल थे। एएनजेडएफ-एनजेडआईआरआई शिष्टमंडल में श्री साइमन ड्रेपर, कार्यकारी निदेशक, एशिया न्यूजीलैंड प्रतिष्ठान, डॉ. मनजीत परदेसी, कार्यवाहक निदेशक, न्यूजीलैंड भारत अनुसंधान संस्थान, सुजाना जैसिफ, निदेशक, अनुसंधान और नियोजन, एशिया न्यूजीलैंड प्रतिष्ठान, डॉ. ब्राइस एडवर्डस, वरिष्ठ एसोसिएट, सुशासन एवं नीति अध्ययन संस्थान, विक्टोरिया विश्वविद्यालय वेलिंग्टन, महामहिम ग्रेम वाटर्स, परामर्शदाता और भारत में तैनात पूर्व उच्चायुक्त तथा श्री चार्ल्स फिनी, पार्टनर, सॉन्डर्स अंसवर्थ, न्यूजीलैंड व्यापार और उद्यम बोर्ड सदस्य शामिल थे।

प्रथम आईसीडब्ल्यूए-अमीरात रणनीतिक अध्ययन और अनुसंधान केन्द्र (ईसीएसएसआर) संवाद, सप्रू हाउस, 15 अप्रैल 2019

विश्व मामलों की भारतीय परिषद (आईसीडब्ल्यूए) और अमीरात रणनीतिक अध्ययन और अनुसंधान केन्द्र (ईसीएसएसआर) के बीच प्रारंभिक संवाद सप्रू हाउस में 5 अप्रैल 2019 को आयोजित किया गया। इस संवाद के जरिये इस नतीजे पर पहुंचा गया कि क्षेत्रीय और वैश्विक मामलों तथा द्विपक्षीय संबंधों के परिप्रेक्ष्य में भारत और संयुक्त अरब अमीरात के बीच बेहतर संबंध कायम होने चाहिए।

आईसीडब्ल्यूए शिष्टमंडल की अध्यक्षता श्री सोमेन बागची, उप महानिदेशक, आईसीडब्ल्यूए ने की। इनके साथ दो सत्रीय संवाद में आईसीडब्ल्यूए के शोध अध्येता डॉ. फज्जूर्रहमान सिद्दीकी और डॉ. दीपिका सारस्वत भी वक्ता के रूप में उपस्थित थीं। प्रथम सत्र में क्षेत्रीय और वैश्विक मामलों पर भारत और संयुक्त अरब अमीरात के बीच भावी कार्यक्रमों के बारे में चर्चा हुई। द्वितीय सत्र में भारत-संयुक्त अरब अमीरात के बीच द्विपक्षीय संबंधों पर चर्चा होने के साथ-साथ दोनों देशों में खुशहाली, प्रगति और सुरक्षा के बाबत रणनीतिक भागीदारी पर भी चर्चा हुई। जामिया मिलिया इस्लामिया के डॉ. मोहम्मद सोहराब और आईसीडब्ल्यूए की निदेशक (अनुसंधान) डॉ. निवेदिता रे ने क्रमश: एक-एक सत्र की अध्यक्षता की। डॉ. पी. के. प्रधान, एसोसिएट फैलो, आईडीएसए और डॉ. वरूशाल टी. घोघले, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय ने इसमें परिचर्चाकर्ताओं के रूप में भाग लिया। कार्यक्रम में सभी शोध अध्येता, विदेश मंत्रालय के पदाधिकारियों और नई दिल्ली में शैक्षणिक समुदाय के आमंत्रित लोगों ने भाग लिया।

ईसीएसएसआर के शिष्टमंडल की अध्यक्षता वैज्ञानिक अनुसंधान कार्य क्षेत्र के सहायक - उप निदेशक अब्दुल्ला अल सुवैदी, सामरिक अध्ययन विभाग के प्रबंधक ऊबैद अलजाबी, और वित्त एवं प्रशासन क्षेत्र के सहायक उप निदेशक मुबारक अलजाबी ने की।

भारत और संयुक्त अरब अमीरात के बीच दोनों देशों के नागरिकों के माध्यम से सुदृढ़ संबंध कायम हुए हैं। भारत सरकार ने दोनों देशों के बीच और अधिक संवाद किए जाने का आग्रह किया है।

वैज्ञानिक कूटनीति पर एनआईएएस शिष्टमंडल के साथ संवाद, सप्रू हाउस, 23 अप्रैल 2019

"वैज्ञानिक कूटनीति" विषय पर राष्ट्रीय आधुनिक अध्ययन संस्थान (एनआईएएस), बंगलुरु के प्रख्यात वैज्ञानिकों के समूह के साथ सप्रू हाउस में 23 अप्रैल 2019 को एक संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

एनआईएएस से आए हुए दल में डॉ. वी.एस. रामामूर्ति, पूर्व सचिव, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, डॉ. एन. रामामूर्ति, पूर्व निदेशक, भौतिक और रसायन विज्ञान प्रभाग, अंतर्राष्ट्रीय अणु ऊर्जा अभिकरण (आईएईए), प्रो. राजाराम नागप्पा, प्रमुख, अंतर्राष्ट्रीय सामरिक एवं सुरक्षा अध्ययन कार्यक्रम, एनआईएएस, डॉ. पी. एम. सुन्द्रराजन, पूर्व निदेशक, रक्षा वैमानिकी अनुसंधान प्रतिष्ठान (डीएआरई), डी.आर.डी.ओ., डॉ. एल.बी. कृष्णन, पूर्व निदेशक, सुरक्षा अनुसंधान और स्वस्थ भौतिक कार्यक्रम, इन्दिरा गांधी अणु अनुसंधान केन्द्र, कलपक्कम और डॉ. डी. सूबा चन्द्रन, एनआईएएस शामिल थे।

आईसीडब्ल्यूए के महानिदेशक डॉ. टी.सी.ए. राघवन ने वैज्ञानिक कूटनीति विषय का महत्व बताते हुए कहा कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी को पारम्परिक क्षेत्र अध्ययन की ओर उन्मुख करने जैसे अग्रवर्ती विषयों को समेकित करने की आवश्यकता है। यह विषय परिषद का केन्द्र बिन्दु रहा है। डॉ. सुब्बा चंद्रन ने विदेशों के साथ संबंध स्थापित करने के रूप में विज्ञान और प्रौद्योगिकी में विकास कार्य करने और भारतीय विशेषज्ञता के उपयोग पर संचालित एनआईएएस की परियोजना के बारे में बताया।

वैज्ञानिकों के दल ने अपने-अपने क्षेत्रों यथा अंतरिक्ष, नाभिकीय ऊर्जा, रक्षा, अंतरिक्ष और कृत्रिम आसूचना के बारे में भावी कार्यक्रमों को साझा किया। उन्होंने विशेष रूप से अपने पड़ोसी देशों के साथ कूटनीतिज्ञ रणनीति के क्षेत्र में इनके योगदान पर प्रकाश डाला। स्वास्थ्य देखभाल क्षेत्र में परमाणु तकनीक में भारत की विशेषज्ञता पर जोर दिया गया।

परिचर्चा के दौरान सुझाव दिया गया कि विज्ञान कूटनीति के संदर्भ में विज्ञान और प्रौद्योगिक परियोजनाएं अपने प्रमुख तकनीकी सहयोग कार्यक्रम प्ज्म्ब् सहित विदेश मंत्रालय की विकासगत प्रशासन भागीदारी परिभाषित उपसमुच्चय बना सकते हैं।

एशिया और प्रशांत प्रभाग, राजनीतिक एवं शांति निर्माण कार्य और शांति अभियान विभाग, संयुक्त राष्ट्र संघ के शिष्टमंडल के साथ संवाद, सप्रू हाउस, 24 अप्रैल 2019

आईसीडब्ल्यूए का संयुक्त राष्ट्र संघ एशिया और प्रशांत प्रभाग से आए शिष्टमंडल के साथ 24 अप्रैल 2019 को संवाद कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इस शिष्टमंडल का नेतृत्व सुश्री मारी यमशीता, एशिया और प्रशांत प्रभाग की उप निदेशक, राजनीतिक और शांति निर्माण मामले एवं शांति अभियान विभाग, यूएनएचक्यू ने किया। शिष्टमंडल ने आईसीडब्ल्यूए के महानिदेशक डॉ. टी.सी.ए. राघवन से भेंट की, जिन्होंने दक्षिण एशिया क्षेत्रीय विषयों और भारत पाकिस्तान संबंधों की वर्तमान स्थिति के बारे में अपने विचार व्यक्त किए। सुश्री नूतन कपूर महावर, संयुक्त सचिव ने दौरा करने वाले शिष्टमंडल का हार्दिक स्वागत करते हुए इस वार्ता कार्यक्रम की अध्यक्षता की। इस अवसर पर चीन के साथ भारत के संबंधों, हिन्द महासागर क्षेत्र की भू-सामरिक कार्यनीति और भारत-प्रशांत क्षेत्र के दृष्टिकोण के बारे में शिष्टमंडल के समक्ष आईसीडब्ल्यूए के शोध अध्येता डॉ. संजीव कुमार, डॉ. अमित कुमार और डॉ. प्रज्ञा पांडेय द्वारा क्रमशः संक्षिप्त प्रस्तुति दी गई। इस अनुक्रम में आईसीडब्ल्यूए और यूएनएचक्यू के बीच सहयोग को आगे बढ़ाने का भी आह्वान किया गया।

प्रो. एस.डी. मुनी और डॉ. राहुल मिश्रा द्वारा "इंडियाज ईस्टवर्ड एंगेजमेंट: फ्रॉम एंटिक्विटी टू एक्ट ईस्ट पॉलिसी" विषयक पुस्तक का विमोचन और परिचर्चा, सप्रू हाउस, 24 अप्रैल 2019

प्रो. एस.डी. मुनी और डॉ. राहुल मिश्रा द्वारा लिखित पुस्तक "इंडियाज ईस्टवर्ड एंगेजमेंट: फ्रॉम एंटिक्विटी टू एक्ट ईस्ट पॉलिसीष, जो कि आईसीडब्ल्यूए का प्रकाशन है, का सप्रू हाउस में 29 अप्रैल 2019 को विमोचन और इस पर परिचर्चा की गई। परिचर्चा कार्यक्रम की अध्यक्षता विदेश मंत्रालय की पूर्व सचिव (पूर्व) प्रीती सरन ने की। परिचर्चाकर्ताओं में राजदूत पाम सान चाउ, भारत में वियतनाम के राजदूत, प्रो. शंकरी सुन्दररमन, प्रो. एसआईएस, जे.एन.यू., प्रो. नयन चन्द, एसोसिएट प्रोफेसर-अशोका विश्वविद्यालय शामिल थे। परिचर्चा दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ भारत के संबंधों पर केन्द्रित थी। साथ इसमें इस बात पर जोर दिया गया कि कैसे क्षेत्र के अध्ययन के साथ ऐतिहासिक संबंधों के तालमेल से पुस्तक ने एक अनुशासनात्मक दृष्टिकोण अपनाने का प्रयास किया है।

सप्रू हाउस में, 30 अप्रैल 2019 को "आईसीडब्ल्यूए के इतिहास पर एक सरसरी नजर" विषय पर गोलमेज परिचर्चा का आयोजन

"आईसीडब्ल्यूए के इतिहास पर एक सरसरी नजर" विषय पर सप्रू हाउस, नई दिल्ली में गोलमेज परिचर्चा का आयोजन किया गया। इस परिचर्चा में चीनी अध्ययन संस्थान के प्रो. मनोरंजन मोहंती, चीनी अध्ययन संस्थान की प्रो. पेट्रीशिया यूबेरॉय और प्रो. एस.डी. मुनि, ससम्मान सेवामुक्त, जेएनयू ने भाग लिया। वक्ताओं ने आईसीडब्ल्यूए की स्थापना और विकास और कई दशकों से वैश्विक मामलों पर सारगर्भित राय और विदेश नीति के बारे में इसके योगदान पर अपने विचार प्रस्तुत किए। इस अवसर पर उन्होंने आईसीडब्ल्यूए के प्रमुख प्रशासकों एवं विद्वानों का स्मरण किया। यह परिचर्चा अंतर्राष्ट्रीय संबंधों और वैश्विक मामलों पर देश के सर्वोच्च राष्ट्र स्तरीय प्रबुद्ध मंडल के रूप में आईसीडब्ल्यूए के इतिहास को अभिलिखित करने के प्रयोजनार्थ प्रस्तावित श्रृंखला में अपने आप में पहली परिचर्चा थी।

सप्रू हाउस में प्रो. डेविड न्यूमैन, मानविकी और सामाजिक विज्ञान संकाय, बेन-गूरियन विश्वविद्यालय द्वारा 07 मई 2019 को वार्ता

प्रोफेसर डेविड न्यूमैन, पूर्व डीन और प्रोफेसर, बेन-गुरियन विश्वविद्यालय नेगेव, राजनीति और सरकार विभाग, इजराइल ने श्इजराइल के चुनाव और इजराइल-फिलिस्तीन शांति प्रक्रिया के भविष्यश पर 07 मई 2019 को वार्ता प्रस्तुत की। इस सत्र की अध्यक्षता राजदूत तलमीज अहमद ने की। इस पैनल के परिचर्चाकर्ताओं में जामिया मिल्लिया इस्लामिया की डॉ. सुजाता ऐश्वर्या, ओ.पी. जिंदल विश्वविद्यालय के डॉ. रोही दासगुप्ता तथा आईसीडब्ल्यूए के शोध अध्येता डॉ. फज्जूर्रहमान सिद्दीकी और डॉ. ध्रुबाज्योति भट्टाचार्जी शामिल थे। इस व्याख्यान में उन्होंने कहा कि इजराइल के हाल में हुए चुनाव शांति प्रक्रिया के बारे में कम और प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू के बारे में जनमत संग्रह ज्यादा थे। उन्होंने कहा कि ये चुनाव केन्द्र और दक्षिणपंथ के बीच का टकराव था। उन्होंने कहा कि इस चुनाव में वामपंथी और कमजोर हो गए। इन चुनावों के विभिन्न आयामों को दृष्टिगत रखते हुए परिचर्चाकर्ताओं ने कहा कि संयुक्त राज्य अमेरिका और अरब दुनिया ने फिलिस्तीन के विवाद को एक तरफ छोड़ दिया है, जो मध्य-पूर्व शांति प्रक्रिया के लिए घातक होगा। इस परिचर्चा के बाद प्रश्न-उत्तरों का दौर शुरू हुआ।

2018 वार्षिक भारत-रूस संयुक्त वक्तव्य पर मध्यवधि समीक्षा के लिए सप्रू हाउस में 09 मई 2019 को बंद दरवाजे में मंथन

विश्व मामलों की भारतीय परिषद ने सप्रू हाउस में 09 मई को एक मंथन सत्र का आयोजन किया। सत्र का उद्देश्य मौजूदा भू-राजनीतिक परिदृश्य में भारत-रूस की सामरिक भागीदारी के संबंध में वार्षिक अवलोकन करना था। इसके अंतर्गत 'विश्व: 10 वर्षों में कहां होगा' और 'भारत-रूस के संबंध: निर्भरता, चुनौतियां और अवसर' शीर्षक पर क्रमिक रूप में दो सत्रों में भारत और रूस के असाधारण और विशेषाधिकार संबंधों के प्रक्षेप पथ पर सुचिंतन करना भी था।

श्री वी. श्रीनिवास, भारतीय प्रशासनिक सेवा, अपर सचिव, प्रशासनिक सुधार और लोक शिकायत विभाग, कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय द्वारा सप्रू हाउस में 14 मई 2019 को दिया गया व्याख्यान

विश्व मामलों की भारतीय परिषद ने श्री वी. श्रीनिवास, भारतीय प्रशासनिक सेवा, अपर सचिव, प्रशासनिक सुधार और लोक शिकायत विभाग, कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय द्वारा 'एशियन अवसंरचना निवेश बैंक: एशिया में अवसंरचनात्मक वित्त पोषण के बदलते हुए आयाम' विषय पर 14 मई 2019 को व्याख्यान का आयोजन किया। इस सत्र की अध्यक्षता समकालिक चीन अध्ययन केन्द्र के महानिदेशक सेवानिवृत्त लेफ्टिनेंट जनरल एस. एल. नरसिंहन ने की। परिचर्चा में प्रसिद्ध अध्येता एवं विकासशील देशों के लिए अनुसंधान एवं सूचना प्रणाली (आरआईएस) डॉ. अमिताभ कुंडु और परिषद के शोध अध्येता डॉ. संजीव कुमार ने भी भाग लिया। उन्होंने कहा कि बैंक में जनवरी 2016 से अपने मौजूदा सदस्यों के बीच में 97 देशों के साथ अपना कार्य शुरू किया। इसका उद्देश्य सतत अवसंरचना, संयोजकता और निजी आर्थिक एकत्रीकरण पर ध्यान देकर एशिया के आर्थिक और सामाजिक विकास में सुधार लाना है।

"भारत-म्यांमार संबंधों में प्रगाढ़ता: बेहतर भविष्य की ओर" विषय पर 15 मई 2019 को सप्रू हाउस में एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

विश्व मामलों की भारतीय परिषद ने "भारत-म्यांमार के बीच संबंधों में प्रगाढ़ता: बेहतर भविष्य की ओर" विषय पर 15 मई 2019 को सप्रू हाउस में एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। संगोष्ठी के प्रतिभागियों में म्यांमार में भारत के तीन पूर्व राजदूत, 8 विश्वविद्यालयों के विद्वान और भारत के 4 प्रबुद्ध मंडल शामिल थे। इस संगोष्ठी में तीन सत्र अर्थात ऐतिहासिक और सभ्यतागत संबंध, राजनीतिक और सुरक्षा सहयोग तथा आर्थिक एवं विकास सहयोग शामिल थे। संगोष्ठी का उद्घाटन आईसीडब्ल्यूए

के महानिदेशक डॉ. टी.सी.ए. राघवन ने अपने भाषण की शुरूआत से किया। इसके पहले सत्र की अध्यक्षता म्यांमार में भारत के पूर्व राजदूत जी. पार्थसारथी द्वारा की गई। सत्र के वक्ताओं में हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, इतिहास और पुरातत्व विभाग, केन्द्रीय हरियाणा विश्वविद्यालय, महेन्द्रगढ़ के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. विनय कुमार राव, पाली विभाग, कोलकाता विश्वविद्यालय के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. सस्वती मुतसुद्दी, पाली विभाग, संस्कृत कॉलेज, कोलकता के सहायक प्रोफेसर डॉ. अहरिन्दम भट्टाचार्या, राजनीति विज्ञान विभाग, रावेनशा विश्वविद्यालय, कटक ओडिशा के सहायक प्रोफेसर डॉ. नेताजी अभिनन्दन, यूजीसी बांग्लादेश और म्यांमार अध्ययन केन्द्र, डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय के सहायक प्रोफेसर डॉ. अम्बूज ठाकुर और ''विश्व में म्यांमार'' शीर्षक से लिखी गई पुस्तक के लेखक श्री अभिजीत दत्त, सिंगापुर शामिल थे। प्रथम सत्र में भारत और बर्मा (म्यांमार) के बीच ऐतिहासिक संबंध, सभ्यता संबंधी मेल, भाषायी और सांस्कृतिक समानता पर विचार-विमर्श किया गया।

इसके दूसरे सत्र की अध्यक्षता म्यांमार में भारत के पूर्व राजदूत डॉ. वी.एस. शेशाद्री ने की। इस सत्र के वक्ताओं में भारत-प्रशांत अध्ययन केन्द्र, अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन विद्यालय, जेएनयू के सेवानिवृत्त प्रो. जी.वी.सी. नायडू, यूजीसी दक्षिण-पूर्व एशिया एवं प्रशांत अध्ययन केन्द्र, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरूपति के निदेशक प्रो. जी. जयचन्द्र रेड्डी, इम्फाल फ्री प्रेस, इम्फाल के सम्पादक श्री प्रदीप फानजोबम, विभाग एवं सुरक्षा अध्ययन केन्द्र, एनआईएएस, बंगलुरू के सहायक प्रो. डॉ. अंशुमन बहेरा और आईसीडब्ल्यूए की अध्येता डॉ. समता मल्लिमपाटी शामिल थे। दूसरे सत्र में म्यांमार में आंतरिक राजनीतिक गतिविधियां और भारत-चीन सहित क्षेत्रीय देशों के साथ म्यांमार के संबंधों पर परिचर्चा की गई। आईबी की सूचना के अनुसार, क्षेत्र में भारतीय विद्रोही समूहों (आईआईजी) का खतरा और म्यांमार के अतिवादी समूहों के साथ उनके संबंधों पर भी चर्चा की गई।

तीसरे सत्र की अध्यक्षता राजदूत गौतम मुखोपाध्याय द्वारा की गई। इस सत्र के वक्ताओं में नीति अनुसंधान केन्द्र, नई दिल्ली की प्रो. डॉ. निम्मी कुरियन, यूजीसी बांग्लादेश और म्यांमार अध्ययन केन्द्र, डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय के प्रो. देव कुमार चक्रवर्ती, राजनीति विज्ञान विभाग, सिक्किम केन्द्रीय विश्वविद्यालय के सहायक प्रो. गड्डे ओमप्रसाद, सीनियर फैलो, ओआरएफ, दिल्ली के डॉ. के. योम, आईसीडब्ल्यूए के शोध अध्येता डॉ. पुयम राकेश सिंह, म्यांमार अध्ययन केन्द्र मणिपाल विश्वविद्यालय के रिसर्च एसोसिएट नोंगथोंबम जितेन शामिल थे। इस सत्र में व्यापार, निवेश, विकासगत भागीदारी सहयोग, संयोजकता, सीमा संबंधी मामलों और स्थानीय परिसंघीय विषयों पर परिचर्चा की गई।

प्रतिभागियों ने भारत में म्यांमार से संबंधित अध्ययन कार्य को बढ़ाने की आवश्यकता पर बल दिया।

अफगान उच्च शांति परिषद के मुख्य कार्यकारी श्री मोहम्मद उमेर दाऊदजई द्वारा सप्रू हाउस में 17 मई 2019 को वार्ता

विश्व मामलों की भारतीय परिषद ने अफगान उच्च शांति परिषद के मुख्य कार्यकारी श्री मोहम्मद उमेर दाउदजई द्वारा अफगान शांति प्रक्रिया में मौजूदा प्रगति पर सप्रू हाउस, नई दिल्ली में 17 मई 2019 को परिचर्चा का आयोजन किया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता अफगानिस्तान में भारत के पूर्व राजदूत श्री विवेक काटजू ने की।

अतिथि वक्ता ने अमेरिका और तालिबान के बीच चल रही वार्ता, अफगानिस्तान में हाल ही में सम्पन्न लोया जिरगा और अफगानिस्तान में आगामी राष्ट्रपति चुनाव के बारे में बात की। उन्होंने श्रोता सदस्यों द्वारा उठाए गए प्रश्नों का भी उत्तर दिया, जिसमें मीडिया और शैक्षणिक वर्ग के लोग शामिल थे।

'बदलती हुई वैश्विक व्यवस्था में यूरोपीय संघ की भूमिका: भारत-यूरोप भागीदारी का भविष्य" पर सप्रू हाउस में 26 जून 2019 को आयोजित एक दिवसीय सम्मेलन

विश्व मामलों की भारतीय परिषद ने 26 जून 2019 को सप्रू हाउस में 'बदलती हुई वैश्विक व्यवस्था में यूरोपीय संघ की भूमिका: भारत-यूरोप भागीदारी का भविष्य' पर एक दिवसीय सम्मेलन का आयोजन किया।

इस सम्मेलन के प्रतिभागियों में 8 विश्वविद्यालयों से संबंधित पूर्व कूटनीतिज्ञ और विद्वान तथा भारत के दो प्रबुद्ध मंडल शामिल थे। इस सम्मेलन के तीन सत्र नामत: 'बदलती हुई वैश्विक व्यवस्था में यूरोप, भारत और बीआरआई और भारत यूरोपीय संघ के बीच संबंधों में सहयोग के आयाम शामिल थे। इसका उद्घाटन आईसीडब्ल्यूए के महानिदेशक डॉ. टी.सी.ए. राघवन ने किया। विदेश मंत्रालय, भारत सरकार के संयुक्त सचिव (पश्चिम यूरोप) श्री जी. बालासुब्रमनियन ने सम्मेलन को संबोधित किया।

पहले सत्र की अध्यक्षता नीदरलैंड में भारत की पूर्व राजदूत भास्वती मुखर्जी ने की।

इस सत्र के वक्ताओं में यूरोपीय अध्ययन केन्द्र, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय की प्रो. भास्वती सरकार, विभागाध्यक्ष, यूरोपीय अध्ययन विभाग, मणिपुर विश्वविद्यालय की प्रो. नीता ईनामदार और विश्व मामलों की भारतीय परिषद की शोध अध्येता डॉ. अंकिता दत्ता शामिल थीं। इस सत्र में यूरोपीय समेकन परियोजना पर परिचर्चा की गई, जो यूरो संकट 2011 से शुरू होने वाले तनाव पूर्ण दबाव के बाबत थी। इसके अलावा यूरोप में शरणार्थियों का पलायन, आतंकवाद, विवादित ब्रेग्जिट और यूरोप गुप्तवाद एवं पॉप्युलिज्म पर भी परिचर्चा की गई। इस सत्र में यूरोपीय परियोजना से संबंधित प्रश्नों पर विस्तारपूर्वक परिचर्चा की गई।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता विदेश सेवा संस्थान के डीन राजदूत जे. एस. मुकुल ने की। इस सत्र के वक्ताओं में यूरोपियन अध्ययन केन्द्र, जवाहरलान नेहरू विश्वविद्याल के प्रो. गुलशन सचदेवा, पूर्व एशिया अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय की पूर्व अध्यक्ष एवं प्रो. मधु भल्ला और विश्व मामलों की भारतीय परिषद की शोध अध्येता डॉ. सुरभि सिंह शामिल थीं। इस सत्र में बीआरआई के कार्यान्वयन के जरिए चीन की आकांक्षाएं और इसके जरिए चीन और यूरोप के बीच संबंधों में परिवर्तन का मूल्यांकन किया गया। इसके अलावा बीआरआई के संबंध में भारत की स्थिति का भी जायजा लिया गया।

तीसरे सत्र की अध्यक्षता नीदरलैंड में भारत की पूर्व राजदूत भास्वती मुखर्जी ने की। इस सत्र के वक्ताओं में राजनीति विज्ञान विभाग, मंगलौर विश्वविद्यालय के प्रो. डॉ. जयराज अमीन, सीयूटीएस-सीआईटीईई, जयपुर के एसोसिएट फैलो डॉ. सौरभ कुमार और रमैया लोक नीति संस्थान, बंगलुरू के उप निदेशक डॉ. चेतन बी. सिंगई शामिल थे। इस सत्र में भारत से संबंधित यूरोपीय संघ कार्यनीति शोध पत्र 2018 के प्रकाशन के परिप्रेक्ष्य में भारत-यूरोपीय संघ की भागीदारी पर परिचर्चा की गई। इस सत्र में ब्रेग्जिट उपरांत विश्व में भारत और यूरोपीय संघ के बीच व्यापारिक संबंधों का संभाव्य प्रभाव और व्यक्ति-दर-व्यक्ति बढ़ते सम्पर्कों के परिप्रेक्ष्य में उच्च शिक्षा और अनुसंधान को दृष्टिगत रखते हुए परस्पर सहयोग के क्षेत्र में अवसर और चुनौतियों पर विचार-विमर्श किया गया।

अंतिम सत्र में देश भर में परस्पर विचार-विमर्श के जरिए भारत और यूरोपीय संघ के बीच संबंधों को और आगे बढ़ाने के महत्व पर भी जोर दिया गया।

तक्षशिला संस्थान और अंतर्राष्ट्रीय ग्रीष्म विद्यालय के साथ २८ जून २०१९ को सप्रू हाउस में गोलमेज/ आइडियाशाला परिचर्चा

विश्व मामलों की भारतीय परिषद द्वारा युवा विद्वानों से सम्पर्क बनाने संबंधी प्रयासों के एक भाग के रूप में तक्षशिला संस्थान और अंतर्राष्ट्रीय ग्रीष्म विद्यालय के साथ भारत-चीन संबंधों के विविध आयामों पर आईडियाशाला 28 जून 2019 को सप्रू हाउस में आयोजित की गई। कार्यक्रम का शुभारंभ आईसीडब्ल्यूए के महानिदेशक डॉ. टी.सी.ए. राघवन और तक्षशिला संस्थान के निदेशक और सहसंस्थापक डॉ. नितिन पाई के शुरुआती भाषण से हुआ। इसके बाद तक्षशिला संस्थान के अनुसंधान विश्लेषक डॉ. अनिरूद्ध केनिसेट्टी द्वारा 'करा कनाल: भारत के लिए इसका महत्व', और तक्षशिला संस्थान के एसोसिएट फैलो श्री मनोज केवल रमाणी द्वारा '5जी, हुवाई और भू-राजनीति: भारतीय मंतव्य का प्रशस्तीकरण विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किया गया। द हिन्दू की कूटनीतिक एवं रणनीतिक कार्य संपादक सुश्री सुहासिनी हैदर द्वारा पैनल परिचर्चा शुरू की गई। पैनल सदस्यों में शिव नादर विश्वविद्यालय के एसोसिएट प्रो. डॉ. जैषिन जैकब और शोध प्रस्तुतकर्ता दोनों शामिल थे।

आईसीडब्ल्यूए के आउटरीच कार्यक्रम

"भारत की विदेश नीति: प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में निरंतरता और परिवर्तन" विषय पर जी.डी.सी. मेमोरियल कॉलेज, बहल, भिवानी में 12-13 अप्रैल 2019 को दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

"भारत की विदेश नीति: प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में निरंतरता और परिवर्तन" विषय पर 12-13 अप्रैल 2019 को जी.डी.सी. मेमोरियल कॉलेज, बहल, भिवानी में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का वित्तपोषण आईसीडब्ल्यूए द्वारा अंशत: किया गया था। संगोष्ठी का प्रारंभ उद्घाटन सत्र से हुआ, जिसमें प्रो. एस. डी. मुनी और डॉ. राजीव नयन, वरिष्ठ रिसर्च एसोसिएट, आईडीएसए जैसे प्रख्यात विद्वान शामिल थे। संगोष्ठी के पांच तकनीकी सत्र थे, जिन्हें दो दिनों में पूरा किया गया। इसका समापन दीक्षांत सत्र के साथ हुआ। डॉ. राकेश कुमार मीना, शोध अध्येता, आईसीडब्ल्यूए इसके विशेष अतिथि थे, जिन्होंने सत्र में स्वागत भाषण दिया।

इतिहास विभाग, सामाजिक विज्ञान संकाय, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा "एशिया का कूटनीतिक इतिहास: बदलते आयाम" विषय पर 18-19 अप्रैल 2019 को दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन

भारत के कूटनीतिक इतिहास विषय पर गहन अध्ययन करने के प्रयोजनार्थ आईसीडब्ल्यूए ने 18-19 अप्रैल 2019 को इतिहास विभाग, सामाजिक विज्ञान संकाय, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा 'एशिया का कूटनीतिक इतिहास: बदलते आयाम' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। आईसीडब्ल्यूए द्वारा इस सम्मेलन का अंशत: रूप में वित्त पोषण किया गया था। इस दो दिवसीय सम्मेलन का प्रारंभ उद्घाटन सत्र से हुआ, जिसमें प्रख्यात विद्वान शामिल थे। सम्मेलन के पांच तकनीकी सत्र थे, जो दो दिनों में पूरे हुए। सत्र का समापन दीक्षांत भाषण के साथ हुआ। इस सम्मेलन में आईसीडब्ल्यूए के शोध अध्येता डॉ. सौरभ मिश्रा ने परिषद की ओर से प्रतिनिधित्व किया।

चेन्नई चीन अध्ययन केंद्र (सी3एस) और दक्षिण भारत वाणिज्य एवं उद्योग चौम्बर, चेन्नई द्वारा 03 मई 2019 को एक दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन

चेन्नई चीन अध्ययन केंद्र (सी3एस) और दक्षिण भारत वाणिज्य एवं उद्योग चौम्बर (एसआईसीसीआई), चेन्नई, तमिलनाडु द्वारा 3 मई 2019 को एक दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। आईसीडब्ल्यूए द्वारा इस सम्मेलन का आंशिक रूप से वित्त पोषण किया गया। इस अवसर पर आईसीडब्ल्यूए के महानिदेशक डॉ. टी.सी.ए. राघवन ने अपना विशेष भाषण दिया। इस अवसर पर चीन में आर्थिक परिवर्तन, भारत और चीन व्यापार, अमेरिका-चीन व्यापार वार्ता और अन्य मुद्दों पर परिचर्चा की गई। आईसीडब्ल्यूए के अध्येता डॉ. पुयम राकेश सिंह ने इस सम्मेलन की समापन कार्रवाई पूरी की।

आईसीडब्ल्यूए विश्लेषण (अप्रैल-जून 2019)

व्यू पॉइंट		
1	डॉ. तेमजेमेरें औ	इंडोनेशिया के चुनाव 2019: प्रजातंत्र में सक्रियता (2 अप्रैल)
2	डॉ. अंकिता दत्ता	राष्ट्रपति शी जिंगपिंग की यूरोप यात्रा का विश्लेषण (10 अप्रैल)
3	डॉ. समता मलमपति	मालदीव में संसदीय चुनावों के परिणाम: क्या वहां प्रजातंत्र के बहाल होने की कोई नई आशा है? (25 अप्रैल)
4	डॉ. स्तुति बनर्जी	अर्जेंटीना में वर्तमान आर्थिक संकट और आने वाले चुनाव
5	डॉ. दीपिका सारस्वत	इराक द्वारा मिस्त्र और जॉर्डन को अरब बिरादरी में वापस आने का अनुरोध; क्षेत्र में शांति निर्माता की भूमिका (16 मई)
6	डॉ. दीपिका सारस्वत	प्रतिरोधक अर्थव्यवस्था और क्षेत्रीय आर्थिक अभिगम्यता: ईरान द्वारा अमेरिकी अधिकतम दबाव अभियान से निपटना (30 मई)
7	डॉ. सुरभि सिंह	सुरक्षा संबंधी चिंतन मनन और 5जी प्रौद्योगिकी-यूरोप की प्रतिक्रिया (04 जून) सुरक्षा संबंधी चिंतन मनन और 5जी प्रौद्योगिकी-यूरोप की प्रतिक्रिया (04 जून)
8	डॉ. जोजिन वी. जॉन	जापान की उभरती हुई बहुपक्षीय भूमिका: क्या जापान के लिए अग्रवर्ती स्थिति से नेतृत्वकारी स्थिति में आने का समय आ गया है? (04 जून)
9	डॉ. राकेश कुमार मीणा	भूटान के प्रधानमंत्री की बांग्लादेश यात्रा (11 जून)
10	डॉ. प्रज्ञा पांडेय	मोदी 2.0 और स्कॉट मोरिसन का नया कार्यकाल: भारत-ऑस्ट्रेलिया संबंधों के लिए इसका अर्थ (25 जून)
11	डॉ. गुंजन सिंह	भारत और एससीओ शिखर सम्मेलन 2019: एक सिंहावलोकन (26 जून)
इशू ब्रीफ		
1	डॉ. आशीष शुक्ला	करतारपुर कॉरिडोर की राजनीति और भारत-पाकिस्तान संबंध (10 अप्रैल)
2	डॉ. सुरभि सिंह	स्पेन में चुनावी वातावरण
3	डॉ. फज्जुर्रहमान सिद्दीकी	लीबिया का अगाधगर्त में पलायन (25 अप्रैल)
4	डॉ. फज्जुर्रहमान सिद्दीकी	मिस्त्र का वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य

5	डॉ. अंकिता दत्ता	ईरान के नाभिकीय समझौता संकट के प्रति यूरोपीय प्रतिक्रिया का विश्लेषण (24 मई)
6	डॉ. चंद्र रेखा	भारत और सऊदी अरब के बीच बढ़ते हुए द्विपक्षीय संबंध (31 मई)
7	डॉ. स्तुति बनर्जी	भारतीय मूल के कनाडावासी और कनाडा में चुनाव (04 जून)
8	डॉ. प्रज्ञा पांडेय	भारत-जापान-अमेरिका: त्रिपक्षीय संबंधों के उभरते हुए आयाम
9	डॉ. चयनिका डेका	पश्चिम और मध्य अफ्रीका में प्रजातांत्रिक परिवर्तन: एक सिंहावलोकन (04 जून)
10	डॉ. तेमजेमेरें औ	वर्तमान बेल्ट रोड पहल में दक्षिण-पूर्व एशिया की भूमिका
11	डॉ. संजीव कुमार	एआईआईबी से संबंधित विकासशील दृष्टिकोण
विशेष रिपोर्ट		
1	डॉ. आशीष शुक्ला	एक भारतीय शोधार्थी की नजरों से चीन की पहली झलक और विश्लेषण (20 जून)
ब्रीफ पॉलिसी		
2	डॉ. चंद्र रेखा	सुदूरपूर्व में रूस की कृषि संबंधी महत्वाकांक्षाएं: भारत किस तरह शामिल हो सकता है? (21 जून)

भारतीय त्रैमासिक
अंतर्राष्ट्रीय मामलों की एक पत्रिका
संस्करण 75, अंक 1,
अप्रैल - जून 2019

आईसीडब्ल्यूए के बारे में

विश्व मामलों की भारतीय परिषद (आईसीडब्ल्यूए) भारत का सबसे पुराना विदेश नीति थिंक टैंक (चिंतक समूह) है, जो विदेश और सुरक्षा नीति के मुद्दों में विशेषज्ञता रखता है। इसे भारत की स्वतंत्रता से पहले 1943 में भारत के पहले प्रधानमंत्री, जवाहरलाल नेहरू की प्रेरणा के अंतर्गत प्रख्यात बुद्धिजीवियों के एक समूह द्वारा स्थापित किया गया था। 2001 में संसद के एक अधिनियम द्वारा विश्व मामलों की भारतीय परिषद को ''राष्ट्रीय महत्व का संस्थान'' घोषित किया गया है।

परिषद अपने आंतरिक संकाय के साथ-साथ बाहरी विशेषज्ञों के माध्यम से नीति अनुसंधान का संचालन करती है। यह नियमित रूप से सम्मेलनों, संगोष्ठियों, गोलमेज चर्चाओं, व्याख्यान और प्रकाशन सहित बौद्धिक गतिविधियों की एक श्रृंखला का आयोजन करता है। यह एक प्रमुख और सुस्थापित पुस्तकालय, वेबसाइट और 'इंडिया क्वार्टरली' नामक एक पत्रिका का रखरखाव करता है। यह अंतर्राष्ट्रीय मामलों में भारत की भूमिका और सरकार और नागरिक समाज नीति के मॉडल और रणनीतियों के बारे में सार्वजनिक जागरूकता बढ़ाने में लगी हुई है, और बहु ट्रैक संवाद और अन्य विदेशी चिंतकों के साथ बातचीत के लिए एक मंच के रूप में कार्य करती है।

न्यूजलेटर आईसीडब्ल्यूए, सप्रू हाउस, बाराखंभा रोड, नई दिल्ली - 110001 द्वारा प्रकाशित
वेबसाइट: http%@@www.icwa.in; दूरभाष संख्या 011-23317246 फैक्स नंबर 011-23310638

मेंटर
डॉ. टी.सी.ए. राघवन, महानिदेशक, आईसीडब्ल्यूए, सप्रू हाउस, नई दिल्ली।

संपादक
नूतन कपूर महावर, सयुक्त सचिव, आईसीडब्ल्यूए

प्रबंध संपादक
डॉ. निवेदिता रे, निदेशक अनुसंधान, आईसीडब्ल्यूए

सहायक संपादक
डॉ. ध्रुबज्योति भट्टाचार्जी, शोध अध्येता, आईसीडब्ल्यूए